(यह तीन प्रकरण मस्कत बंदर में उतरे हैं)

राग श्री

रे हो दुनियां बावरी, खोवत जनम गमार।
मदमाती माया की छाकी, सुनत नाहीं पुकार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस दुनियां के बावले लोगो! तुम अपने अनमोल जीवन को मूर्खों की भांति गंवा रहे हो। यह बावली दुनियां माया की मस्ती में है और मेरी पुकार को नहीं सुनती।

अपनी छायासों आप बिगूती, बल खोए चली हार।
आग बिना जलत अंग में, जल बल होत अंगार।। २ ।।

यह दुनियां अपनी ही रची माया में फंसी है और अपनी शक्ति खोकर हार गई है। यह बिना अग्नि के काम क्रोध की अग्नि में जलकर खाक हो रही है।

सत सब्द को कोई न चीन्हे, सूने हिरदे नहीं संभार।
समझे साध जो आपको देखें, तामें बड़ी अंधार।। ३ ।।

यहां अखण्ड की पहचान करने वाला कोई नहीं है। उनके सूने हृदय में सत की वाणी टिकती नहीं है। इस संसार में जो अपने आपको सन्त, महात्मा, ज्ञानी धर्माचार्य कहलाते हैं उनके अन्दर भी माया का अन्धेरा है।

रे यामें केते आप कहावें स्याने, पर छूटत नहीं विकार।
स्यानप लेके कंठ बंधाए, या छल रच्यो है नार।। ४ ।।

इस संसार में पूज्य पाद कहलाने वालों से भी माया की झूठी इच्छा छूटती नहीं है। वह भी अपनी चतुराई से माया को अपने गले में लपेटे हुए हैं। इस प्रकार के छल का ब्रह्माण्ड माया ने रच रखा है।

रे मूढ़मती या फंद में उरझे, उपजत नहीं विचार।
आप न चीन्हें घर न सूझे, ना लखें रचनहार।। ५ ।।

हे मूर्खो! तुम माया के ऐसे बन्धन में फंस गए हो कि इससे निकलने का विचार ही तुम्हारे मन में नहीं आता है। तुम्हें न तो अपने आप की पहचान है और न अखण्ड घर की सुध आती है और न उस बनाने वाले की ही खबर होती है।

अपनी मत ले ले साधू बोले, सब्द भए अपार।
बोहोत सबद को अर्थ न उपजे, या बल सुपन धुतार।। ६ ।।

इस संसार में अपने ही अटकल से साधु, महात्मा, ज्ञानियों ने तरह-तरह के ग्रन्थ बनाए हैं। इस तरह से अनेक ग्रन्थों के हो जाने से हकीकत के शब्दों का अर्थ ही नहीं मिलता। इस तरह से इस छल वाली माया ने इस सपने के संसार की शक्ति का हरण कर लिया है।

यामें सतगुर मिले तो संसे भानें, पैंडा देखावे पार।
तब सकल सबद को अर्थ उपजे, सब गम पड़े संसार।। ७ ।।

इस संसार में यदि सतगुरु मिले तो संशय मिट सकते हैं। वह संशय मिटाकर पार का रास्ता बता सकते हैं। तब सब धर्म ग्रन्थों के हकीकत के शब्दों का अर्थ समझ में आ सकता है और संसार की पहचान हो सकती है।

Nijanand App

Nijanand App